परमात्मा की हमसे अपेक्षायें

माँ-बाप अपने बच्चे को छोटे से बड़ा कर पढ़ाते हैं, सिखाते हैं और समझाते हैं। और जब बच्चा तैयार हो जाता तो उनकी भी कुछ उससे अपेक्षायें होती हैं कि वो अपने पिता का कार्य सम्भाले, उसको आगे बढ़ाये। इसी तरह परमपिता परमात्मा भी बच्चों को एडॉप्ट कर सिखाते हैं, पढ़ाते हैं, समझाते हैं और उसको लायक बनाते हैं। जब बच्चे तैयार हो जाते हैं तो उनकी भी कुछ अपेक्षायें होती हैं। परमपिता परमात्मा की भी अपने बच्चों से चाहना है कि वे उनके कर्त्तव्य को सम्भालें और आगे बढ़ाएं।

वर्तमान में परमपिता परमात्मा की हम बच्चों से आश है, जैसे साकार रूप में हमने ब्रह्मा बाबा को देखा, उन्हें जब शिव बाबा से सत्य ज्ञान मिला, तो वे मन सहित सर्वस्व समर्पण होकर शिव पिता के कर्त्तव्य को आगे बढ़ाने में लग गये और उसे करके दिखाया। वे पूर्ण रूप से बेहद के वैराग्य की स्थिति में स्थित हो गये। मेरा कुछ भी नहीं, ये सब परमात्मा की देन है। मुझे सम्पूर्ण रूप से निमित्त बन साकार रूप में उदाहरण बनना है। जो कि हम सब जानते हैं कि ब्रह्मा बाबा ने ऐसा करके दिखाया। उनके सानिध्य में रहते हुए हमने भी ब्रह्मा बाबा और परमपिता शिव बाबा की पालना ली, उनसे सीखा, उन्होंने समझाया, मार्गदर्शन किया। तो हम बच्चों का भी ये कर्त्तव्य है कि हम भी उनके जैसा बन संसार के सामने उदाहरण पेश करें। ये उनकी हमारे प्रति शुभ कामना है।

वर्तमान समय भौतिक चकाचौंध में साधनों का बोलबाला है। सुख के साधन उपलब्ध हैं। किंतु सभी के जीवन में शांति, खुशी और चैन का अभाव है। जहाँ देखो चाहे सम्बंधों में, व्यवहार में, परिवार में और वातावरण में शांति और खुशी की कमी दिखाई देती है। ऐसे में हम सबको वैराग्य वृत्ति को धारण करना है। वैराग्य वृत्ति एकमात्र ऐसा टूल है जिससे ही मन-इच्छित सुख, शांति प्राप्त होती है। जब हम दिल से वैराग्य वृत्ति में स्थित होकर व्यवहार में आते हैं तो हमें कुछ लेने या पाने की कामना नहीं रहती। बल्कि हमें रहम भाव आता कि जो भी दुःखी हैं, अशांत हैं, इच्छाओं के वशीभूत हैं, उन सबको भी इनसे छुड़ाएं।

वैराग्य वृत्ति दिल से जब होती है तभी दिल खुश होता है। जब हम ऐसी स्थिति में होते हैं तो दिल की खुशबू दूसरे के दिल तक पहुंचती है। मन से वैराग्य वृत्ति होने पर वो चैन दूसरे के मन तक भी पहुंचता है। जैसे ब्रह्मा बाबा ने कहा और दिल से समर्पण किया, सबकुछ तेरा और वो ट्रस्टी होकर रहे। मन से भी उसको स्वयं के प्रति यूज़ नहीं किया। ऐसी वैराग्य वृत्ति हम बच्चों में जब नयन में, मन में, चैन में, चलन में दिखाई देगी तब ही हम भी दूसरे को दुःख से मुक्त कर सकेंगे। आज के समय की मांग है, हम इस तरह की पॉवरफुल तपस्या कर मंसा सेवा के निमित्त बनें। अभी हमारे मन से ऐसे भाव निकलें जो दूसरों के मन को भी स्पर्श हो, अनुभव हो, उसकी आवश्यकता है। निरंतर इस स्थिति में स्थित रहकर वायुमण्डल बनाने की ज़रूरत है। जैसे हमने ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के साकार संस्थापक पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा बाबा को देखा, वे आदि से अंत तक उसी स्थिति में स्थित रहे, उसका वायब्रेशन आज भी मधुबन में महसूस होता है, सबको आकर्षित करता है। सभी को शांति स्तम्भ पर पहुंचने पर शांति का अनुभव होता और उन जैसा बनने की इच्छा प्रखर होती है, सुकून मिलता है। ऐसे ही हमें भी वैराग्य वृत्ति धारण कर सच्ची साधना व तपस्या करनी है। कहते हैं, सन शोज़ फादर। तब और लोग कहेंगे, इन्हों के जीवन में खुशी और शांति झलकती है, इन्हों को ऐसा किसने बनाया! तब वे भी अपनी व्यर्थ की इच्छाओं से मुक्त होकर अच्छा बनने की हिम्मत करेंगे। ब्रह्मा बाबा ने हमें सिखाया, हमारा जीवन सुखमय, शांतिमय और खुशियों से भरा बनाया, तो हमारा दायित्व है, हम भी उनके उसूलों को धारण कर दूसरे जो दुःख, अशांति से ग्रस्त हैं उनपर रहम करें और उन्हें उनसे मुक्ति दिलायें। तब दुःख का खात्मा होगा और ये संसार सुखमय बनेगा।

प्राप्ति के आधार से प्यार का संबंध

कई बड़ी-बड़ी बातें सुनकर डर जाते हैं। कहते हैं इतना करना पड़ेगा। मेरे से नहीं हो सकेगा। बाबा के पास आये हैं, दाता के पास आये हैं तो दो मुट्ठी भरकर खुश हो रहे हैं। अरे, पूरी झोली भरो ना। दिलशिकस्त इसीलिए होते हैं क्योंकि बाबा का साथ अनुभव नहीं होता। कम्बाइन्ड नहीं हैं। हम कितने भी कमज़ोर हैं लेकिन बाबा कमज़ोर नहीं है, वह सर्वशक्तिवान है। तो हम अपने को अकेला क्यों समझते हैं। दिलशिकस्त होने के कारण कई बार कह देते है कि आप समझ लो, मैं ऐसे ही चलूंगी, मेरा भाग्य इतना ही है, चाहे मैं लक्ष्मी-नारायण बनूं या नहीं, मैं तो ऐसे ही रहूंगी। लेकिन मैं कमज़ोर भी हूँ तो भी मेरा साथी सर्वशक्तिवान है- यह याद रहेगा तो मास्टर सर्वशक्तिवान बन जायेंगे।

बाबा कहते हैं अभी तो यह कहो कि याद करना मुश्किल नहीं लेकिन भूलना मुश्किल है। क्योंकि प्राप्ति के आधार पर दिल ने माना मेरा बाबा है।

एक है नॉलेज की रीति से दिमाग से पहचानने वाले, दूसरे हैं दिल से पहचानने वाले। तो दिमाग की रीति से हमने अगर बाबा को पहचाना है कि हाँ ठीक है, निराकार है, ज्योतिबिन्दु है, परमधाम में रहता है, ज्ञान का सागर है, प्यार का सागर है, ये शक्तियां हैं- यह हमने सिर्फ नॉलेज की रीति से, दिमाग से जान लिया कि बाबा ये है और दूसरा है जो मेरी दिल कहे कि हाँ, मेरा बाबा है। सिर्फ नॉलेज के आधार से प्यार नहीं पैदा होता। प्राप्ति के आधार से प्यार होता है। तो प्राप्ति को पहले सामने लाओ, सिर्फ बाबा-बाबा नहीं करो। प्राप्ति ऐसी चीज़ है जो किसी अन्जान से भी संबंध जुट जाता है। कहीं रास्ते में आपको ठोकर लग गई वहाँ आपका कोई भी नहीं है लेकिन किसी अन्जान ने आपको सहारा दिया तो आपके दिल का प्यार उससे हो जायेगा। क्योंकि प्राप्ति हुई। फौरन ही कहेंगे कि आपको हम जीवनभर नहीं भूलेंगे। कोई सम्बन्ध ही नहीं है और जीवनभर नहीं भूलेंगे! क्योंकि प्राप्ति हुई। तो बाप और बच्चे के सम्बन्ध को प्राप्ति के आधार से याद करो। बाबा ने मुझे क्या दिया! बाबा से क्या आनंद की अनुभूति हुई- उस प्राप्ति में डूब जाओ, उस अनुभव में खो जाओ, फिर आपको दिल से बाबा के प्यार का ऐसा अनुभव होगा जैसे कम्बाइन्ड चीज़ है जिसको कोई अलग नहीं कर सकता है। यह है दिल से बाबा को याद करना। बाकी नॉलेज के आधार से, दिमाग से याद किया तो नज़दीक अनुभव नहीं कर सकेंगे। थोड़े समय के लिए शान्ति मिलेगी, थोड़े टाइम के लिए सोल कान्शियस हो जायेंगे। सदाकाल के लिए नहीं। बाबा कहते हैं अभी तो यह कहो कि याद करना मुश्किल नहीं लेकिन भूलना मुश्किल है। क्योंकि प्राप्ति के आधार पर दिल ने माना मेरा बाबा है। जब दिल में कोई बात आ जाती है तो बहुत मुश्किल निकलती है। दिमाग तक होती है तो चेन्ज हो जाती है। आशिक-माशूक होते हैं तो एक-दो के प्यार में समा जाते हैं, कितना भी दुनिया चाहे उनको अलग कर नहीं सकती। ये तो हमारा बाबा है। तो दिल कहे बाबा तेरा शुक्रिया।

लौकिकता में अलौकिकता हो... ये हमेशा ध्यान रहे...

ऋषि-मुनियों के लिए सुनते थे वो त्रिकालदर्शी थे। आज हम बाबा के बच्चे विचार करते है इस समय हम त्रिकालदर्शी हैं, तीसरा नेत्र खुला है तो त्रिकालदर्शी है, तो स्थिति कितनी ऊंची है। तीसरा नेत्र त्रिकालदर्शी बनाता है। त्रिकालदर्शी बनने से बहुत हल्के होते है। तभी तीनों लोकों की सैर करते हैं। ऐसा फील होता है जैसे यहीं कहीं एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा रहे हैं। नैचुरल हो गया है। ऐसे ही तीनों लोकों में आना-जाना नैचुरल हो गया है। यहाँ संगम पर खुशी मना रहे हैं। ब्राह्मण जीवन है, सफल कर रहे हैं। सफल करेंगे तो सफलता मिलेगी। सफल करने के लिए दिल खुली रखेंगे, मन भी खुला रखेंगे तो सफलता मिलेगी। कर्म भी ऐसा हो जो दूसरे को प्रेरणा मिले। इसमें हमारी एक्यूरेसी हो। संकल्प एक्यूरेट होता है तो लक्की है। यदि संकल्प श्रेष्ठ नहीं होंगे तो आप समान नहीं बना सकते। आप समान बनाने की सेवा ऑर्डनरी सेवा नहीं है। मैसेज देना भी बड़ी सेवा है। परन्तु उससे भी बड़ी आप समान बनाने की सेवा है। आप समान माना अपने समान नहीं, क्योंकि हमारे में भी जो कमी होगी वह भी आ जायेगी। कमी जल्दी आ जायेगी, अच्छाई बाद में आयेगी। बाबा समान बनाना माना बाबा के नज़दीक आना। उसकी बुद्धि अच्छा काम करेगी। बाबा का अच्छा सर्विसएबुल बनेंगे। सर्वशक्तिवान से जुटे रहेंगे तो शक्ति आ जायेगी। अन्दर ध्यान रखना है कि हमारे सर्व सम्बन्ध भगवान से हों। और कहीं सम्बन्ध नहीं चला जाये।

बाबा से सर्व सम्बन्ध है तो यह शक्ति सर्व कमज़ोरियों को खत्म कर देती है। बाबा सर्वशक्तिवान है, ज्ञान का सागर, प्रेम, आनंद, शान्ति का सागर है लेकिन वह गुण मेरे में कैसे आयें, साथी में कैसे आये? जब सर्व सम्बन्ध एक बाप से होंगे तभी वह गुण आयेंगे।

तो सूक्ष्म में हमारी भावना आप समान बनाने की क्या है? थोड़ा सेवा में मदद करे, क्लास करा ले, लिखाई-छपाई कर ले... वह तो जिसमें जो गुण-कला होगी वह करेगा। कर्मयोगी बनना है तो कर्म तो करना ही है। शरीर निर्वाह अर्थ भी करना है। लेकिन शरीर में जो आत्मा है उसकी सम्भाल भी करनी है। कर्मेन्द्रियों के द्वारा मेरी क्या सेवा है। कर्मेन्द्रियों के द्वारा आत्मा पतित से पावन बनती है। पतित भी बनी है तो कर्मेन्द्रियों के द्वारा बनी है। ऐसे पावन नहीं बनेगी। कर्मेन्द्रियों सहित जब इतने जन्म लिए हैं तो कर्मेन्द्रियों द्वारा जो कर्म किए हैं वो आत्मा के संस्कार बने हैं। फिर सम्बन्ध में, देह में आकर जो कर्म किये हैं वो कर्म भी पावन बनाना पड़ेगा। सम्बन्ध में भी हमारा कर्म बहुत अच्छा हो। खुद के साथ, औरों के साथ भी। अलौकिकता में लौकिकता न आ जाये - यह खबरदारी हमेशा रहे। लौकिकता में अलौकिकता हो।

अपने को स्टूडेंट समझ हरेक से सीखते चलें

हमको नॉलेज मिली है कि तुम आत्मा इस मस्तक पर मणि की तरह चमकती हुई बिन्दु हो। तुम उस मणि अर्थात् बिन्दु को ही देखो और उस बिन्दु में कितने विशेष गुण हैं, कितनी उसमें रूहानियत की शक्ति है, वही देखो। क्योंकि कोई भी बात पहले बुद्धि में आती फिर वृत्ति में चली जाती है। तो वह वृत्ति फिर दृष्टि से काम करेगी। तो यह वृत्ति और दृष्टि दूसरों को कितना प्रेम देती, रिस्पेक्ट देती, दूसरों के प्रति कितनी सद्भावना है। यह सब नॉलेज से रियलाइज़ हो जाता है। यदि अन्दर से कुछ और भावना हो और बाहर से दिखावटी भावना हो - तो भी फील होगा। दिल से हम किसको कितना लव देते हैं या कॉमन रूप से लव रखते हैं - इन दोनों का अन्तर यह नॉलेज ही स्पष्ट करती है। इसीलिए ये नॉलेज हमको हरेक बात में निर्णय शक्ति देती है। तो आत्मिक स्मृति और परमात्म स्मृति का यही आधार है। क्योंकि बुद्धि के क्लीयर होने से ही स्मृति पॉवरफुल होती जाती है - ये दो सब्जेक्ट(ज्ञान और योग) जीवन के मूल आधार है। जितना-जितना इसकी गहराई में जाते हैं, स्टडी करते हैं, कॉन्शियस में रहते हैं, उतना दैवी गुणों की धारणा होती है, सूक्ष्म संस्कार परिवर्तन होते हैं क्योंकि रियलाइज़ेशन की शक्ति आ जाती है। अतः सबसे पहले यह नॉलेज खुद को बहुत फायदा देती है।

आज प्रत्येक मनुष्य जीवन में अपनी-अपनी समस्याओं में उलझा रहता है। कभी तबियत ठीक नहीं होगी तो प्रॉब्लम, परिवार की समस्या आई तो प्रॉब्लम, आपसी कोई बात हुई तो भी प्रॉब्लम, जिसकी लाइफ में जितनी प्रॉब्लम आती, उतना वह मनुष्य मूँझा रहता है। कईयों की लाइफ ऐसी है- ठीक है चल रहे है, उदास है, मूंझे हुए है, उनको अपनी लाइफ की वैल्यू नहीं, लाइफ का कोई हल नहीं, कोई ऊंचा आदर्श नहीं, कोई उम्मीद नहीं। लेकिन यह ज्ञान हमें जीवन की हर प्रॉब्लम का हल देता है। इसलिए आप लोग जितना-जितना इस ज्ञान-योग की स्टडी करते जायेंगे उतनी सफलता मिलती जायेगी। जैसे वैज्ञानिक खूब स्टडी करते, नई नई खोजें करते,

मुझे हर एक से स्टूडेन्ट बन गुण ग्रहण करने हैं, स्टडी करनी है, इतना होशियार होना है चाहे कोई छोटा काम करता, चाहे बड़ा करता है। चाहे कोई भाषण करता, चाहे कोई कर्मणा सेवा करता लेकिन वह कितना उस बात में परफेक्ट है, मुझे उसकी परफेक्शन अपने में लानी है।

सफल होते जाते, अनेक साधन तैयार करते जाते तो जितनी उसकी गहराई है उतनी इस साइलेन्स की शक्ति व योग की शक्ति की भी गहराई है। यह बहुत बड़ी शक्ति है, इस शक्ति के आधार से हम अपनी जीवन को जैसा दिव्य बनाना चाहें वैसा बना सकते हैं।

श्रेष्ठ कर्म के लिए सबसे पहले चाहिए दैवी गुणों की धारणा। दैवीगुणों की धारणा में कमी आने का मूल कारण है इगो(अहंकार)। अनुभव कहता है ज्ञान बहुत सुन लो, योग बहुत अच्छा लगाओ, बाबा को प्यार करो परन्तु अगर अन्दर में इगो है तो वह सब बातों को ढक देगा, नुकसान कर देगा। सबसे पहले हमने देखा कि पिताश्री जिनके पास नॉलेज की इतनी बड़ी अथॉरिटी थी, इतनी हम बच्चों से मेहनत करते, समझाते लेकिन मैंने कभी उनके व्यवहार में इगो नहीं देखा। इगो अभिमान पैदा करता। ईर्ष्या भी पैदा करता क्योंकि देह अभिमान से इगो आता, नशा चढ़ता है। हमें कभी इगो न आये उसकी अनेक युक्तियां बाबा ने बताई है। पहले तो हमारी बुद्धि में रहता इस ज्ञान की पढ़ाई में सदैव स्टूडेंट हूँ, जितना हम पढ़ाई करें उतनी थोड़ी है। दूसरे सब समझते हम सब स्टूडेन्ट पढ़ाई पढ़ रहे हैं। मैं होशियार हूँ यह मैं कभी नहीं सोचती। मेरे से बहुत होशियार हैं। जितना जो होशियार है मुझे उनसे सीखना है। हर एक कोई किसमें होशियार है, कोई किसी बात में होशियार है। मुझे हर एक से स्टूडेन्ट बन गुण ग्रहण करने हैं, स्टडी करनी है इतना होशियार होना है चाहे कोई छोटा काम करता, चाहे बड़ा करता है। चाहे कोई भाषण करता, चाहे कोई कर्मणा सेवा करता लेकिन वह कितना उस बात में परफेक्ट है, मुझे उसकी परफेक्शन अपने में लानी है। जब मैं बुद्धि में रखती कि हर बात में मुझे परफेक्ट होना है तो कौन किस बात में परफेक्ट है, वह मुझे देखना है। तो हर एक से मैं विशेषता उठाती हूँ। ऐसा नहीं सोचती कि यह ऐसा है, वैसा है। मैं होशियार हूँ या मैं यह नहीं सोचती दादी हूँ। हम सदैव स्टूडेंट हैं। कोई का कैसा भी व्यवहार है, चलन है, दृष्टि-वृत्ति है, हमें उनसे सीखना है। बाप शिक्षक है पर हम हर एक से शिक्षा लें तो हमारी दृष्टि ऐसी रहती जिससे न खुद में इगो आता, न कभी किसी के लिए नफरत।